History

Dr. Sammy Deval Das
Sub-MJC-IV
Semester-III

Q शामन्तवाद के सामाजिक आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का वर्णन करें

Ans:- सामंती प्रथा ने मध्यकालीन युरोप के जीवन के प्रत्येक अंग को प्रभावित किया। इस प्रथा ने राजनीतिक दुरवस्था के काल में दृढ़ सामाजिक संगठन लाने की चेष्टा की। सामन्त प्रथा से युरोप के जीवन में संतुलन आया और अराजकता का अन्त हुआ सामन्तों ने सैनिक सेवा को मजबूत किया। युरोप में एक सुव्यवस्थित शासन-व्यवस्था की स्थापना हुई। चूँकि 15वीं शताब्दी तक युरोप के सामन्तवाद का बोलबाला रहा इसलिए मध्यकालीन युरोप के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक जीवन पर सामन्तवाद का व्यापक प्रभाव पड़ा। साहित्य, कला एवं दर्शन पर भी उसके प्रभाव पड़े।

(1) सामाजिक जीवन पर प्रभाव:- सामंती समाज में जमीन का महत्व बहुत अधिक था। बड़े-बड़े भूमिपतियों की बड़ी प्रतिष्ठा थी। जिनके पास जमीन का अभाव था वे निम्नकोटि के समझे जाते थे। समाज एक Pyramid के समान था, जिसके शिखर पर राजा था और नीचे किसान। समाज मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित था सामन्त वर्ग तथा किसान वर्ग। सामन्त वर्ग समाज का धनी वर्ग था। इस वर्ग को कई अधिकार प्राप्त थे। इस वर्ग के लोग शिकारी होते थे और इनके बेटों को बचपन से ही युद्ध की शिक्षा दी जाती थी और बालिग होने पर 'नाईट' की पदवी दी जाती थी। सामाजिक जीवन पर इसका बुरा प्रभाव था।

② आर्थिक जीवन पर प्रभाव - सामन्ती अर्थव्यवस्था मे कृषि पर जीवन केन्द्रित था। किसान और सर्फ ही सामन्त के बदले खेती करते थे। कृषि-व्यवस्था मैनर-प्रणाली पर आधृत थी सर्फों (कृषियों) का जीवन अत्यधिक कष्टमय था। वे उस भूमि से पूर्णतः बँधे थे जिसपर वे खेती करते थे। उनका जीवन-मरण, खान-पान, रहन-सहन उसी भूमि से बँधा था। उसी पर वे जन्म लेते, बढ़ते और मरते थे। जीवनभर उन्हें अपने अधिपति का बेगार खटना पड़ता था। यही सामंतवाद का आर्थिक स्वरूप था।

③ धार्मिक जीवन पर प्रभाव:- मध्यकालीन यूरोप मे चर्च का बोलबाला था और धर्म पर पादरियों का अधिकार था। चर्च के पास बेशुमार सम्पत्ति थी तथा पादरियों का जीवन अत्यन्त ही कलुषित था। अपनी स्थिति बनाये रखने के लिए चर्च की ओर से Immunity के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जाता था। पादरी लोग साधारण जनता को अन्धविश्वास में रखकर धर्म के नाम पर कई प्रकार के Tax वसूल करते थे।

④ राजनीतिक जीवन पर प्रभाव:- सामन्तवाद के अन्तर्गत राज-काज में सामन्तो का बोलबाला था। सामन्त अपने मनोनुकूल देश की व्यवस्था को अपने काबू मे रखने की चेष्टा करते थे जिससे राष्ट्रीय भावना का विकास न हो और किसान हमेशा दबे रहें। केन्द्रीय सरकार के

के अभाव में प्रजा निःसहाय थी और अपने-अपने क्षेत्रों में सामन्त सर्वशक्तिमान थे। चूँकि भूमि की प्रधानता थी इसलिए भूमि के कारण आपसी युद्ध होते रहते थे। सामन्तों के पास फौजों थी फलतः चारों ओर अशान्ति और अराजकता फैली हुई थी।

(5) संस्कृति प्रभाव - मध्यकालीन यूरोप की कला और साहित्य भी सामन्त प्रथा से प्रभावित थी। सामन्ती जीवन युद्ध तथा भोग-विलासप्रधान थे, जिसकी छाप उस युग के साहित्य और कला पर भी थी। रोमनेस्क शैली सामन्तों के पुरुषत्व और समरप्रियता का परिचय देती थी। आगे चलकर गोथिक शैली का प्रचार हुआ जो सुन्दरता सौम्य तथा कोमलता का परिचय देती है।

(6) साहित्य पर प्रभाव :- मध्यकालीन यूरोप का इतिहास भी सामन्तों की वीरता तथा प्रेम की कहानियों से ओत-प्रोत है। इस युग में वीर गाथा साहित्य का अभ्युदय हुआ। कुछ ऐसे पेशेवर गायक तथा पर्यटक थे जो साज पर युद्ध और प्रेम की कथाएँ गाते थे। इस तरह शूरधर्म-सम्बन्धी साहित्य का विकास हुआ। इस सम्बन्ध में प्रायः यह कहावत प्रचलित है कि - chivalry is the flower of Feudalism" वीरता तथा प्रेम की साहसिक रचनाएँ होती थीं। रोला के गान तथा राजा अर्थर और नाइटहुड की कहानियाँ उस युग की दो प्रधान धाराओं का प्रतिनिधित्व करती हैं।